तुलसी के राम

डॉ. भरतकुमार एन. सुथार
आसी प्रोफेसर, फाइन आर्टस् एन्ड आर्टस् कोलेज,पालनपुर

"तुलसी के राम"

हिन्दी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल के भक्तिकाल की सगुण भक्ति काव्यधारा की रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी की अद्वितीय कवि प्रतिभा है । इनका जन्म वि.सं. 1589 में उ.प्र. के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था । इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे तथा माता का नाम हुलसी था । इनके बचपन का नाम "रामबोला" था । इनके गुरू का नाम नरहरिदास था । तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। रत्नावली की मधुर भर्त्सना से वे रामभक्ति की ओर मुड़े।

तुलसीदास सगुण शाखा के भक्तकवि हैं । उनके आराध्य मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम हैं । अवधी भाषा में लिखा गया "रामचरितमानस" तुलसी की कीर्ति का मूल आधार स्तम्भ हैं । यह सुप्रसिद्ध महाकाव्य है, जिसमें राम–कथा सात काण्डों में विभक्त हैं । वि.सं. 1631 में रामनवमी के दिन तुलसीने "रामचरितमानस" की रचना प्रारंभ की । दो वर्ष, सात महीने, छब्बीस दिनों में ग्रंथ की समाप्ति हुई । वि.सं. 1633 में मार्गशीर्ष शुक्कलक्ष में राम विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये। तुलसी न सिर्फ अनन्य रामभक्त थे, परंतु अपने समय के जागरूक लोकनायक भी थे । वे शील, सौंदर्य और शक्ति के उपासक थे । तुलसी की भक्तिभावना में लोक–मंगल की प्रबल भावना है । उनके आराध्य राम शील, सौंदर्य और शक्ति, तीनों के गुण सागर हैं ।

कबीर के राम और तुलसी के राम अलग–अलग हैं । कबीर के राम निर्गुण ईश्वर हैं, निराकार ब्रह्म हैं । वे न तो दिखायी देते है, न रूप, रंग, आकार सम्पन्न हैं। वे न तो मूर्तिपूजा के रूप में विद्यमान हैं, और न कहीं अवतार धारण करते हैं। वे तो सर्वव्यापी हैं, अणु अणु में बसे हुए निर्गुण, निराकार परब्रह्म है, जिन्हें कबीर राम कहकर पुकारते है, जब कि तुलसीदास के राम सगुण ईश्वर है; साकार भगवान हैं, जिन्होंने राजा दशरथ के घर अवतार धारण किया हैं । तुलसी के राम राजा के पुत्र है, जो श्रेष्ठ मानव है । शील, सौंदर्य और शक्ति से सम्पन्न राम तुलसी के आराध्य हैं जो मर्यादापुरूषोत्तम राम हैं । तुलसी ने अपने महाकाव्य में राम के विभिन्न रूप जैसे कि आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता को चित्रित किया हैं। तुलसी के "रामचरितमानस" और राम का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त के "साकेत" और राम पर पड़ा है । तुलसी के राम परब्रह्म, विष्णु के अवतार और मर्यादा पुरूषोत्तम है । गुप्तजी ने कहा है कि "रामचरित मानस" के राम "साकेत" में नायकों के भी नायक और सबके शिक्षक अथवा शासक के रूप में प्रतिष्ठित है ।

आदिकवि वाल्मीकि के राम भगवान न होकर महापुरूष हैं, जबकि तुलसीने ईश्वर का महिमा मंडित रूप प्रदान कर राम को हमेशा के लिए जीवन और साहित्य का अनिवार्य अंग बना दिया है । तुलसीदास "मानस" में कहतें हैं – "एक अनीह अरूप अनामा । जब सच्चिदानंद परधामा । ब्यापक बिस्वरूप भगवाना । ते हिं धरि देह चरित कृत नाना ।"

"मानस" के राम सीता या लक्ष्मण से हास्य विनोद नहीं करते, परंतु "सांकेत" में मानवीय पक्षों और संवेदनशीलता को अधिक स्थान मिला हैं । "मानस" में ईश्वर की महानता का प्रदर्शन हैं, गुप्तजी के काव्य में मानव के ईश्वरत्व का प्रदर्शन हैं । "रामचरति मानस" के पात्रों के संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन सही हैं कि – "किसी पात्र में उसे शील रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए कई अवसरों पर उसकी अभिव्यक्ति दिखानी पडती है । "रामचरित मानस" के भीतर राम, भरत, लक्ष्मण, दशरथ और रावण ये कई पात्र ऐसे हैं जिनके स्वभाव और मानसिक प्रवृत्ति की विशेषता गोस्वामीजी ने कई अवसरों पर प्रदर्शित भावों और आचरणों की एकरूपता दिखाकर प्रत्यक्ष की हैं ।"

राम "रामचरित मानस" महाकाव्य का प्रधान पात्र हैं, नायक हैं । मुख्य पात्र होने के कारण भिन्न भिन्न परिस्थितियों में उनका जीवन दिखाया गया है । उनकी मानसिक स्थिति को झकझोरनेवाले, उभारनेवाले कई प्रसंग उनके सामने आये हैं। लक्ष्मण भी हर परिस्थिति में उनके साथ रहे, अत: उनके सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है । कविने राम–लक्ष्मण के चरित्रों का चित्रण अधिक व्यापकता के साथ पूर्ण किया है । भरत के चरित्र का चित्रण संक्षिप्त हैं, किन्तु जितना अंकित है, उतना सब से उज्जवल, निर्मल और निर्दोष है । जिस परिस्थिति में भरत का चित्रण हुआ है, उससे बढ़कर शील की कसौटी और क्या हो सकती है ?

वीरता के साथ–साथ धीरता, गंभीरता और कोमलता राम का गुण है । यही उनका "रामत्व" है । बाल्यावस्था में जिस प्रसन्नता के साथ राम और लक्ष्मणने घर छोडा और विश्वामित्र के साथ बाहर रहकर अस्त्रशिक्षा प्राप्त की तथा विध्नकारी विकटराक्षसों के साथ अपना बल आजमाया यह उनके उल्लासपूर्ण साहस का सूचक है जिसे "उत्साह" कहते है । बाल्य अवस्था में ही उन्होंने विकट प्रवास किये थे । चौदह वर्ष वन में रहकर अनेक कष्टों का सामना करते हुए, जगत को क्षुब्ध करनेवाले कुंभकर्ण और रावण जैसे राक्षसो को मारा । "मानस" के द्वारा हम राम और लक्ष्मण जैसे दो अद्वितीय वीरो को पृथ्वी पर पाते है । वीरता की दृष्टि से देखें तो हम इन दो पात्रों में कोई भेद नहीं कर सकते । पर सीता स्वयंवर प्रसंग में दोनों भाइयों के स्वभाव में काफी फर्क दिखायी देता है जो अंत तक दिखायी देता है । राम की जो धीरता और गंभीरता हम परशुराम के साथ संवाद करने में देखते हैं, वह बराबर आगे आनेवाले प्रसंगो में भी देखते है । इतना तो हम कह सकते है कि राम का स्वभाव धीर और गंभीर था तथा लक्ष्मण का उग्र और चपल।

सारे अवधवासियों को लेकर भरत को चित्रकूट की और आते देखकर लक्ष्मण की त्योरी चढ़ जाती हैं, पर राम के मन में भरत के प्रति किसी भी प्रकार का संदेह नहीं होता । अपनी सुशीलता के बल से उन्हें उसकी सुशीलता पर पूरा विश्वास है । सुमंत जब राम–लक्ष्मण को विदा कर अयोध्या लौटने लगते है तब रामचन्द्रजी अत्यंत प्रेमभरा संदेश पिता से कहने को कहते है, जिसमें कहीं भी खिन्नता या उदासीनता का लेश नहीं है । वे सारथी से कहते हैं –

"सब बिधि सोइ करतव्य ।
दुख न पाव पितु सोच हमारे ।।"

उनका यह कहना लक्ष्मण को अच्छा नहीं लगा । जिस निष्ठुर पिताने स्त्री के कहने में आकर बनवास दिया, उसे भला सोच क्या होगा ? पिता के व्यवहार की कठोरता के सामने लक्ष्मण का ध्यान राम के वचन पालन और परवशता की ओर न गया, उनकी वृत्ति इतनी धीर और संयत न थी । जब वे पिता के प्रति कुछ कठोर वचन कहने लगे, तब राम ने उन्हें रोका और सारथी से बहुत बिनती की कि लक्ष्मण की ये बाते पिता से न कहना ।

"पुनि कछु लषन कटु बानी । प्रभु बरजेड बड़ अनुचित जानी ।। सकुचि राम निज सपथ दिवाई । लषन संदेषु कहिय जानि जाई ।।" यह संकोच राम की सुशीलता और लोकमर्यादा का भाव व्यंजित करता है । तुलसीदासने अपने काव्य में ऐसे मर्यादा पुरूषोत्तम राम का चरित्र चित्रण किया है ।

तुलसीदास ने राम के रूप–सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण किया है । उदाहरण स्वरूप – "मोरपंख सिर सोहत नीके । मुच्छ बीच–बीच कुसुम कलीके ।। भाल तिलक, श्रमबिन्दु सुहाए । श्रवन–सुभग भूषन छबि छाए । बिकट भृकुटी कच घूघरारे । नव सरोज–लोचन रतनारे ।। चारू चिबुक, नासिका, कपोला । हास–बिलास लेत मनु मोला ।। तुलसी की सौन्दर्य–भावना के संदर्भ में डॉ. रामप्रसाद मिश्र का कथन है कि – "शक्ति–शील संयुक्त होने के कारण तुलसी के राम का सौन्दर्य प्रेरक और पावन भी हो जाता है । रामायण के राम का सौन्दर्य एक महोतमहीयान् योद्धा का सौन्दर्य है, नायक का सौन्दर्य है । रामचरित मानस के राम का सौन्दर्य एक पूर्णपुरूष का सौन्दर्य है । एक समग्र सौन्दर्य–द्रष्टा के रूप में तुलसीदास की समता संसार का कोई कवि नहीं कर सकता । तुलसी की सौन्दर्य भावना अपने आप में समग्र है । उनके सौन्दर्य–चित्र सत्य–शिव–सुन्दरम् की त्रिमूर्ति है । उनकी समता दुर्लभ है ।

"अयोध्या कांड" में कविने राम की स्थित प्रज्ञता का कलात्मक चित्रण किया है। राम का प्रशांत–गहन आनन राज्याभिषेक के समाचार से प्रसन्न नहीं हुआ, वनवास के समाचार से मलिन नहीं हुआ। सुख और दु:ख के चरम क्षणों में एकरसता अथवा समरसता ही स्थितप्रज्ञता है ।

राम–वनगमन–प्रसंग में राम की महत्तमता अथवा पुरूषोत्तमता प्रशांत–गहन स्वरूप प्राप्त करती है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं । पितृभक्ति के इतिहास में राम का स्थान श्रवण कुमार या भीष्म के साथ साथ सर्वश्रेष्ठ है । यहां पर वे एक सच्चे आज्ञाकारी पुत्र के रूप में सामने आते है । तुलसी के शब्दो में –

"मन मुसुकाइ भानुकुलभानू । राम सहज आनंदनिधान ।।
सुनु जननी, सोइ सुत बड़भागी, जो पितु–मातु बचन अनुरागी ।।
तनय मातु–पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि, सकल संसारा ।।"

तुलसीदास तन, मन, जीवन, सभी दृष्टियो से राममय है । राम का चरित और चरित्र इतना अधिक महान और विशद है कि उनसे सम्बन्द्ध कथानक ग्रहण कर कोई भी कवि महाकाव्य या मुक्तक काव्य की सृष्टि कर डालता है ।

संदर्भ

१ मध्यकालीन हिन्दी कविता, सं. रोहित उपाध्याय और डॉ. हसमुख बारोट, पृ.६९
२ तुलसी मानस संदर्भ, सं.डॉ. रामस्वरूप आर्य, पृ.४०१
३ तुलसीदास, "रामचरित मानस", पृ.१/१३/२
४ गोस्वामी तुलसीदास, आ. रामचन्द्र शुक्ल, पृ.९३
५ दे. तुलसीदास, "रामचरित मानस"
६ दे. तुलसीदास, "रामचरित मानस"
७ तुलसीदास, "रामचरित मानस" पृ.१/२३३/२-७
८ तुलसी साहित्य के सर्वोत्तम अंश डॉ. रामप्रसाद मिश्र,, पृ.३८
९ "रामचरित मानस" पृ.२/४०/५, ७-८